समझ सकते। जो केवल मनोधर्मी या बौद्धिक रुचि के लिये वैदिक शास्त्रों का अध्ययन करते हैं, उन विद्वानों के लिये श्रीकृष्ण को तत्त्व से जानना सुगम नहीं है। औपचारिक रूप से पूजा के लिये मन्दिर जाने वाले भी श्रीकृष्ण को तत्त्व से नहीं जान सकते। केवल भक्तिमार्ग के द्वारा ही श्रीकृष्ण को जाना जा सकता है, जैसा अगले श्लोक में वे स्वयं कह रहे हैं।

भक्त्या त्वनन्यया शक्य अहमेवंविधोऽर्जुन।
ज्ञातुं द्रष्टुं च तत्त्वेन प्रवेष्टुं च परंतप।।५४।।

भक्त्या=भक्ति से; **तु**=तो; **अनन्यया**=सकामकर्म और ज्ञान के रहित, अर्थात् शुद्ध; **शक्यः**=सम्भव है; **अहम्**=मुझे; **एवंविधः**=इस प्रकार; **अर्जुन**=हे अर्जुन; **ज्ञातुम्**=जानना; **द्रष्टुम्**=प्रत्यक्ष देखना; **च**=तथा; **तत्त्वेन**=तत्त्व से; **प्रवेष्टुम्**=प्रवेश करना; **च**=भी; **परंतप**=हे महाबाहु।

अनुवाद

हे अर्जुन! अनन्य भक्ति के द्वारा ही तेरे सामने खड़े मुझ को तत्त्व से जाना और प्रत्यक्ष देखा जा सकता है। भक्तियोग से ही मेरे तत्त्व के रहस्य में तेरा प्रवेश हो सकेगा।।५४।।

तात्पर्य

श्रीकृष्ण का तत्त्वज्ञान एकमात्र अनन्य भक्ति से हो सकता है। इस श्लोक में उन्होंने स्वयं यह स्पष्ट कर दिया है; अतः अप्रामाणिक व्याख्याकार, जो मनोधर्म की पद्धति से भगवद्गीता को जानने के लिये प्रयत्नशील हैं, जान जायें कि वे अपना समय ही नष्ट कर रहे हैं। श्रीकृष्ण को अथवा उनके माता के गर्भ से चतुर्भुज रूप में प्रकट होकर तत्क्षण द्विभुज रूप धारण कर लेने के रहस्य को कोई नहीं जान सकता। स्पष्ट कहा है कि उन्हें कोई नहीं देख सकता। परन्तु वेदों के अनुभवी पाठक वैदिक शास्त्रों से उनके सम्बन्ध में विविध प्रकार की जानकारी प्राप्त कर सकते हैं। वेदों में अनेक विधि-विधान हैं; श्रीकृष्णतत्त्व का सच्चा जिज्ञासु इन शास्त्रविहित विधानों का परिपालन अवश्य करे। इन नियमों के अनुसार तप किया जा सकता है। जहाँ तक दान का सम्बन्ध है, निश्चित विधान है कि दान के पात्र श्रीकृष्ण के भक्त हैं, जो कृष्णभावनामृत को सम्पूर्ण विश्व में प्रसारित करने के लिए भक्तियोग के परायण रहते हैं। कृष्णभावनामृत मानवता के लिये महान् वरदान है। श्रील रूप गोस्वामी ने श्रीश्रीचैतन्य महाप्रभु को महावदान्य (महादाता) अवतार कहा है, क्योंकि उन्होंने परम दुर्लभ कृष्णप्रेम का सर्वत्र उन्मुक्त वितरण किया। मन्दिर में अर्चा-पूजा करने से पारमार्थिक उन्नति का पथ प्रशस्त हो जाता है। अतः वैदिक शास्त्रों के अनुसार भगवद्भक्ति के प्रारम्भिक साधकों के लिये अर्चा-पूजा अत्यन्त आवश्यक है।

जिसकी परमेश्वर में अनन्यभक्ति है और जिसे सद्गुरु का मार्गदर्शन प्राप्त है, वह श्रीभगवान् का साक्षात्कार कर सकता है। प्रामाणिक सद्गुरु से शिक्षाग्रहण किए